# अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

## कक्षा : बारहवीं- जैनागम स्तोक वारिधि ( परीक्षा 04 जनवरी, 2026 )

### उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) वैक्रिय के घर हैं-
(क) 44 (ख) 10
(ग) 34 (घ) 40 ( ग )

(ii) मनुष्य के घर के आगति स्थान हैं-
(क) 44 (ख) 48
(ग) 43 (घ) 39 ( ग )

(iii) तीन विकलेन्द्रिय जघन्य-मध्यम स्थिति के लगातार अधिकतम भव कर सकते हैं-
(क) अनन्त (ख) असंख्यात
(ग) संख्यात (घ) 8 ( ग )

(iv) जघन्य-उत्कृष्ट के बिना 2 भव के कुल गमे हैं-
(क) 2805 (ख) 2889
(ग) 774 (घ) 1646 ( ग )

(v) संख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य तेउकाय के घर में गमों से आ सकता है-
(क) 9 (ख) 3
(ग) 1 (घ) 7 ( क )

(vi) असंज्ञी मनुष्य काल करके पृथ्वीकाय के घर में गमों से आ सकता है-
(क) 9 (ख) 3
(ग) 1 (घ) 7 ( ख )

(vii) औदारिक जीवों के वैक्रिय के घरों में आने के कुल नाणत्ता हैं-
(क) 774 (ख) 1646
(ग) 404 (घ) 715 ( घ )

(viii) बेइन्द्रिय जीवों की उत्कृष्ट आयु होती है-
(क) 12 वर्ष (ख) 12 माह
(ग) 6 माह (घ) 3 हजार वर्ष ( क )

(ix) जो असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय मरकर पहली नरक में आने वाला है, उसके संहनन होता है-
(क) हुण्डक (ख) सेवार्त्त
(ग) वज्रऋषभनाराच (घ) समचौरस ( ख )

(x) भावितात्मा अणगार की माता गर्भ में स्वप्न देखती है-
(क) 14 (ख) 30
(ग) 4 (घ) 1 ( घ )

(xi) सुखमा आरा होता है-
(क) 4 कोटाकोटि सागर (ख) 3 कोटाकोटि सागर
(ग) 2 कोटाकोटि सागर (घ) 21 हजार वर्ष ( ख )

(xii) नारकी जीवों के अवधिज्ञान का संस्थान होता है-
(क) आयत (ख) पल्यक
(ग) तप्राकार (घ) झल्लरी ( ग )

(xiii) धूमप्रभा के नारकों को उत्कृष्ट अवधिज्ञान होता है-
(क) तीन कोस (ख) दो कोस
(ग) एक कोस (घ) साढ़े तीन कोस ( ख )

(xiv) सप्रदेशी-अप्रदेशी के थोकड़े में संयत द्वार के अन्तर्गत 5 स्थावर में बहुत जीव अपेक्षा भंग पाया जाता है-

(क) पहला (ख) पाँचवाँ

(ग) छठा (घ) दूसरा ( ग )

(xv) वचन योगी समुच्चय जीव 19 दण्डक में सप्रदेशी-अप्रदेशी की अपेक्षा बहुत जीव आसरी भंग पाये जाते हैं-

(क) 1,2 (ख) 1,5,6

(ग) 1,2,3,4,5,6 (घ) छठा ( ख )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(i) वज्रऋषभ नाराच संहनन वाला पर्याप्त अवस्था में ही काल करता है। ( हाँ )

(ii) संख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य से काल करके पृथ्वीकाय में उत्पन्न होने वाले में तेजोलेश्या हो सकती है। ( नहीं )

(iii) सेवार्त्तक संहनन वाला काल करके नरक में दूसरी नारकी तक ही उत्पन्न हो सकते हैं। ( हाँ )

(iv) बारहवें देवलोक में कम से कम 9 वर्ष की आयु वाले संयत मनुष्य ही उत्पन्न हो सकते हैं। ( नहीं )

(v) मनुष्य युगलिक की अवगाहना जघन्य 500 धनुष झाझेरी से लेकर उत्कृष्ट तीन गाउ तक की हो सकती है। ( हाँ )

(vi) वैक्रिय के घरों में आगति स्थान 220 हैं। ( नहीं )

(vii) आयुष्य का नाणत्ता जघन्य, उत्कृष्ट गमे में अवश्य पड़ता है। ( हाँ )

(viii) अप्काय मरकर पृथ्वीकाय के घर में आता है तब जघन्य गमा से अवगाहना का नाणत्ता पड़ता है। ( हाँ )

(ix) संख्यात वर्षायुष्क सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय मरकर पृथ्वीकाय के घर में आता है तब जघन्य गमा से समुद्घात का नाणत्ता नहीं पड़ता है। ( नहीं )

(x) तीर्थंकर की माता तेरहवें स्वप्न में रत्नों की राशि देखती है। ( हाँ )

(xi) सुखमा आरा लगते धरती की सरसता गुड़ जैसी मिठास की होती है। ( नहीं )

(xii) मनोद्रव्य का जानने वाला अवधिज्ञान से क्षेत्र की अपेक्षा लोक के असंख्यातवें भाग को जानता है। ( नहीं )

(xiii) भाषा वर्गणाओं को जानने वाला अवधिज्ञान से काल की अपेक्षा पल्योपम के संख्यातवें भाग को जानता है। ( नहीं )

(xiv) 'भव्यपना' पारिणामिक भाव है। ( हाँ )

(xv) चौदहवाँ गुणस्थान अशाश्वत है। ( हाँ )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1=(10)

| | | | |
|---|---|---|---|
| (i) | दूसरे भव में मोक्ष | (क) श्रेष्ठ रत्नों से बने भवन को देखे और उसमें प्रवेश करे। | सीसे की राशि (ढेर) को देखे और उस पर चढ़ जाये |
| (ii) | उसी भव में मोक्ष | (ख) आल-जंजाल देखना | श्रेष्ठ रत्नों से बने भवन को देख और उसमें प्रवेश करे। |
| (iii) | अव्यक्त स्वप्न | (ग) विस्तार वाला स्वप्न | आल-जंजाल देखना |
| (iv) | प्रतान स्वप्न | (घ) कुम्भ कलश | विस्तार वाला स्वप्न |
| (v) | महास्वप्न | (च) अवसर्पिणी काल का चतुर्थ आरा | कुम्भ कलश |
| (vi) | अन्नाहार | (छ) सीसे की राशि (ढेर) को देखे और उस पर चढ़ जाये | अवसर्पिणी काल का चतुर्थ आरा |
| (vii) | तुच्छाहार | (ज) अवसर्पिणी काल का तीसरा आरा | अवसर्पिणी काल का पाँचवाँ आरा |

(viii) फल, फूल, अन्न (झ)अवसर्पिणी काल का छठा आरा

अवसर्पिणी काल का तीसरा आरा

(ix) बेर के बराबर (य) अवसर्पिणी काल का पाँचवाँ आरा

अवसर्पिणी काल का दूसरा आरा

(x) बिलवास (र) अवसर्पिणी काल का दूसरा आरा

अवसर्पिणी काल का छठा आरा

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(i) मेरी आयु अन्तर्मुहूर्त से करोड़ पूर्व की होने पर भी अवगाहना जघन्य अंगुल के असंख्यातवें भाग से लेकर एक हजार योजन तक हो सकती है। असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय

(ii) मेरे घर के आगति स्थान 39 होते हैं। तिर्यंच पंचेन्द्रिय

(iii) पृथक्त्व मास की स्थिति होने पर मेरी अवगाहना पृथक्त्व अंगुल होती है।

संख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य

(iv) मैं बिना मन वाला होने के कारण पल्योपम के असंख्यातवें भाग से अधिक की आयु का बंध नहीं कर सकता असंज्ञी तिर्यंच पंचेन्द्रिय

(v) वैक्रिय के घरों में काल करके आने पर मेरी जघन्य स्थिति पृथक्त्व मास होती है। संख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य

(vi) मैं वस्तु तत्त्व को जानने का उपाय हूँ। गमा

(vii) मैं अन्तिम दण्डक हूँ और मेरे 15 घर है। वैमानिक

(viii) मैं 33 सागरोपम की उत्कृष्ट स्थिति वाला होकर भी मरकर तिर्यंच पंचेन्द्रिय के घर में आता हूँ। 7वीं नरक का जीव

(ix) मुझसे निकला मनुष्य नियमा मोक्ष जाता है। सर्वार्थ सिद्ध

(x) हमारे लिए नियमा है कि हम अपनी स्थिति से ज्यादा स्थिति देवलोक में नहीं पाते हैं। युगलिक

(xi) वनस्पतिकाय से मेरे घर में जघन्य गमों से उत्पन्न होने पर उत्कृष्ट अनन्त भव हो सकते हैं। वनस्पति काय

(xii) मेरा जीव गर्भ में आता है तब मेरी माता 14 महास्वप्नों में से कोई तीन स्वप्न देखती है। प्रतिवासुदेव

(xiii) मेरे उतरते हुए धरती की सरसता उपजाऊ धरती जैसी होती है। सुखमा-दुःखमा/ तीसरा आरा

(xiv) मैं एक ऐसा अवधिज्ञान हूँ, जिसमें अलोक में भी देखने की सामर्थ्य रही हुई है। सम्बद्ध/उत्कृष्ट/ परमावधि

(xv) मेरी अवस्था पाँच स्थावर को छोड़कर शेष 19 दण्डकों में अशाश्वत है। बाटा बहता अवस्था

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2 = (18)

(i) नौ गमा लिखिए।

उ. 1. औघिक-औघिक, 2. औघिक-जघन्य, 3. औघिक-उत्कृष्ट, 4. जघन्य-औधिक, 5. जघन्य-जघन्य, 6. जघन्य-उत्कृष्ट, 7. उत्कृष्ट-औघिक, 8. उत्कृष्ट-जघन्य, 9. उत्कृष्ट-उत्कृष्ट।

(ii) जघन्य-उत्कृष्ट के बिना 3 भव के गमा कहाँ होते हैं ?

उ. संख्यात वर्षायुष्क संज्ञी मनुष्य मरकर 3, 6, 9 इन तीन गमों से सर्वार्थसिद्ध के घर में आता है, तब जघन्य उत्कृष्ट के बिना 3 भव करता है।

(iii) ज्योतिषी, पहले व दूसरे देवलोक के आगति स्थान लिखिए।

उ. आने वाले जीव- संख्यात वर्षायुष्क सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, असंख्यात वर्षायुष्क सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, संख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य व असंख्यात वर्षायुष्क सन्नी मनुष्य।
आगति स्थान- 3 X 4 = 12 ।

(iv) तीर्थंकर की माता द्वारा देखा जाने वाला चौथा स्वप्न लिखिए।

उ. चौथे स्वप्न में लक्ष्मी को अपने घर गीत गाते हुए देखती है। इसका फल यह है कि तीर्थंकर भगवान केवल ज्ञान रूपी लक्ष्मी सहित होते हैं।

(v) वर्तमान में एक सेवार्त्त संहनन एवं एक हुण्डक संस्थान मिलने का प्रमाण लिखिए।

उ. वर्तमान में एक सेवार्त्त तथा एक हुण्डक संस्थान मिलने का उल्लेख आचार्य धर्मघोष सूरी कृत प्रकरण संग्रह के अन्तर्गत काल सप्ततिका प्रकरण एवं तन्दुल वैचारिक प्रकरण के आधार पर किया गया है।

(vi) अवधिज्ञान की कोई एक परिभाषा लिखिए।

उ. मन और इन्द्रियों की सहायता के बिना सीधे आत्मा ये रूपी पदार्थों को जानना अवधिज्ञान कहलाता है।

द्रव्य, क्षेत्र, काल तथा भाव की मर्यादा के साथ रूपी पदार्थों को सीधे आत्मा से जानना अवधिज्ञान कहलाता है।

अवधि ज्ञानावरणीय कर्म के क्षयोपशम से रूपी पदार्थों (पुद्गलों) को सीधे आत्मा से मर्यादित रूप से जानना अवधिज्ञान कहलाता है।

नोटः- इन तीनों में से कोई एक मान्य है।

(vii) अवधिज्ञान का उत्कृष्ट क्षेत्र लिखिए।

उ. उत्कृष्ट क्षेत्र-सम्पूर्ण अग्निकायिक जीव जितने क्षेत्र को स्पर्श कर सके उतना अवधि ज्ञान का उत्कृष्ट क्षेत्र समझना चाहिए।

(viii) देवता नारकी में कषायों की शाश्वतता-अशाश्वतता लिखिए।

उ. देवता में क्रोध, मान, माया कषाय अशाश्वत है, लोभ कषाय शाश्वत है। जबकि नारकी में मान, माया, लोभ कषाय अशाश्वत है, क्रोध कषाय शाश्वत है।

(ix) सप्रदेशी-अप्रदेशी के संख्या की अपेक्षा से बनने वाले छः भंग लिखिए।

उ. 1. सिय सप्रदेशी, 2. सिय अप्रदेशी, 3. सप्रदेशी एक अप्रदेशी एक, 4. सप्रदेशी एक अप्रदेशी बहुत, 5. सप्रदेशी बहुत अप्रदेशी एक, 6. सप्रदेशी बहुत अप्रदेशी बहुत।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3 = (27)

(i) सोलह भवस्थानों में से नौंवा भवस्थान लिखिए।

उ. संख्यात वर्षायुष्क संज्ञी मनुष्य मरकर सातवीं नरक के एक घर में आता है।

| | |
|---|---|
| कितनी स्थिति से आवे- | जघन्य पृथक्त्व वर्ष, उत्कृष्ट करोड़पूर्व। |
| कितनी स्थिति पावे- | जघन्य 22 सागर, उत्कृष्ट 33 सागर। |
| कितने भव करे- | जघन्य उत्कृष्ट के बिना 2 भव। |
| आगति स्थान- | 1 x 1 = कुल 1 |
| गमा- | 1 x 1 x 9 =कुल 9 |

(ii) असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय मरकर मनुष्य के घर में आता है तब भव, आगति स्थान एवं गमा लिखिए।

उ.

| | |
|---|---|
| भव- | 1, 2, 4, 5, 6, 7, 8वें गमें से जघन्य 2, उत्कृष्ट 8 भव<br>3, 9वें गमे से जघन्य उत्कृष्ट के बिना 2 भव। |
| आगति स्थान- | 1 x 1 = 1 |
| गमा- | 1 x 1 x 9 =9 |

(iii) असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय मरकर जब जघन्य गमा से वैक्रिय के 12 घरों में आता है तब अध्यवसाय का नाणत्ता पड़ने का कारण लिखिए।

उ. अन्तर्मुहूर्त्त की अल्पावधि में पूरी स्थिति तक अध्यवसाय अशुभ होने से नारकी में तथा शुभ होने से देवता में आ सकता है, अन्यथा नहीं। अध्यवसाय की औघिक लब्धि यहाँ पर शुभ-अशुभ दोनों है। अतः अध्यवसाय में अन्तर होने से नाणत्ता पड़ता है।

(iv) अप्काय के जीव के उत्कृष्ट गमा से पृथ्वीकाय के घर में आने का कालादेश लिखिए।

उ. 1, 2, 4, 5 गमा आसरी जघन्य 2, उत्कृष्ट असंख्यात भव।
5 गमा-
3. औघिक-उत्कृष्ट-अन्तर्मुहूर्त्त, 22000 वर्ष। 28000 वर्ष, 88000 वर्ष।
6. जघन्य-उत्कृष्ट-अन्तर्मुहूर्त्त, 22000 वर्ष। 4 अन्तर्मुहूर्त्त, 88000 वर्ष।
7. उत्कृष्ट-औघिक-7000 वर्ष, अन्तर्मुहूर्त्त। 28000 वर्ष, 88000 वर्ष।
8. उत्कृष्ट-जघन्य-7000 वर्ष, अन्तर्मुहूर्त्त। 28000 वर्ष, 4 अन्तर्मुहूर्त्त।
9. उत्कृष्ट-उत्कृष्ट-7000 वर्ष, 22000 वर्ष। 28000 वर्ष, 88000 वर्ष।

(v) संख्यात वर्षायुष्क संज्ञी मनुष्य मरकर जघन्य गमा से वैक्रिय के 15 घरों में आने पर नाणत्ता लिखिए।

उ. जघन्य गमा तीन, नाणत्ता पड़े पाँच-पाँच।
1. अवगाहना- पृथक्त्व अंगुल, 2. ज्ञान- तीन ज्ञान, तीन अज्ञान, 3. समुद्घात- प्रथम पाँच, 4. आयुष्य- पृथक्त्व, 5. अनुबन्ध-आयुवत्।

(vi) अवधिज्ञानी क्षेत्र से भरत क्षेत्र, मनुष्य लोक, रुचकवर द्वीप तथा सम्पूर्ण लोक देखने वाला काल से क्रमशः कितना देखता है ?

उ. भरत क्षेत्र- अर्द्धमास, मनुष्यलोक- एक वर्ष,
रुचकवर द्वीप- वर्ष पृथक्त्व, सम्पूर्ण लोक- देशोन पल्योपम।

(vii) अनुगामिक अवधिज्ञान किसे कहते हैं ?

उ. जो अवधिज्ञान जीव के साथ में ही रहता है। उसके स्थान परिवर्तन कर लेने पर भी वह साथ ही रहता है, उसे अनुगामिक अवधिज्ञान कहते हैं।

(viii) तैजस-कार्मण शरीरी में सप्रदेश-अप्रदेश की अपेक्षा एक जीव-बहुत जीव आसरी भंग लिखिए।

उ. सशरीरी, तैजस-कार्मण शरीरी 24 दण्डक जीव- एक जीव अपेक्षा 1, 2 भंग पाता है।
सशरीरी, तैजस-कार्मण शरीरी 19 दण्डक जीव- बहुत जीव अपेक्षा 1, 5, 6 भंग पाते हैं।
सशरीरी, तैजस-कार्मण शरीरी 5 स्थावर जीव- बहुत जीव अपेक्षा एक छठा भंग पाता है।

(ix) भाषा अपर्याप्ति में सप्रदेश-अप्रदेश की अपेक्षा एक जीव बहुत जीव आसरी भंग लिखिए।

उ. भाषा अपर्याप्ति समुच्च जीव, 19 दण्डक- एक जीव अपेक्षा 1, 2 भंग पाता है।
भाषा अपर्याप्ति समुच्चय जीव, 3 विकलेन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय- बहुत जीव अपेक्षा 1, 5, 6 भंग पाते हैं।
भाषा अपर्याप्ति, शेष 15 दण्डक- बहुत जीव अपेक्षा 6 ही भंग पाते हैं।